नेशनल बुक ट्रस्ट की कुछ बाल–पुस्तकें

❑ कमलेश चन्द्र जोशी

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीनीकरण के चलते हासिल हुई उपलब्धियों के बाद जो एक नयी चुनौती सामने आयी है, वह है, बच्चों के लिए प्रचुर साहित्य की उपलब्धता। यदि बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखते ही पर्याप्त पूरक पुस्तकें उपलब्ध नहीं करायी जातीं तो एक ओर तो उनमें पढ़ने की आदत नहीं पनप पाती, दूसरे यह स्थिति पढ़ने की क्षमता के भी प्रतिकूल जाती है । कहना न होगा कि खराब किताबें इसका विकल्प कदापि नहीं हो सकती । नेशनल बुक ट्रस्ट ने बच्चों के लिए रोचक और ज्ञानवर्धक बाल साहित्य प्रकाशित करने की दिशा में बहुत काम किया है । बच्चों के लिए रची किताबों पर गंभीर चर्चा को हम बहुत जरूरी मानते हैं ।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा हाल ही में प्रकाशित बाल पुस्तक 'कजरी गाय झूले पर' बच्चों के मन की किताब है । इस किताब में कजरी गाय की कहानी है । कहानी की शुरूआत चरागाह में गायों के घास चरने से होती है । सभी गायें घास चर रही हैं, लेकिन कजरी गाय का मन घास चरने को नहीं होता, वह पेड़ पर झूला झूलना चाहती है । वह चुपचाप सबसे आंख बचाकर साइकिल चलाते हुए अपने मित्र कौए के पास पहुंचती है । वह साइकिल के कैरियर से पटरा और रस्सी निकालती है तथा अपने मित्र कौए से झूला डालने को कहती है । लेकिन कौआ शुरू में आना कानी करता है और कहता है, कि मैं क्यों बांधूं ? क्या गायें कभी झूला झूलती हैं ?

''गायें चरागाह में घास चरती हैं, फिर बैठकर जुगाली करती हैं और चीजों को घूरती हैं । उसके बाद वे दूध देने के लिए अंदर जाती हैं। वे अपने हाल से संतुष्ट दिखाई देती हैं।'' तब कजरी गाय पूछती है, ''क्या तुम इस हाल से संतुष्ट हो ?'' तब कौआ चिल्लाता है ''नहीं, कभी नहीं'' । कजरी गाय फिर कौए को आगे समझाती है, बच्चे कितनी सारी चीजें करते हैं, उन्हें बड़ा मजा आता है । कजरी गाय की इन बातों को सुनकर आखिर में कौआ राजी हो जाता है ।

कौए और गाय की इन बातों को हम अपने से जोड़कर देखें। जब बच्चा कुछ नया काम करना चाहता है तो हम कहते हैं कि ये तुम से नहीं होगा । इसके अलावा अगर हम गाय की तुलना अपने गांव की किसी लड़की से करके देखें । अगर गांव की लड़की साइकिल चलाना चाहती है तो हम आंख तरेर लेते हैं और कहते हैं कि लड़की होकर साइकिल चलायेगी ? लड़कियों के तो दूसरे काम हैं - पानी लाना, झाड़ू लगाना, बर्तन मांजना आदि । जिस तरह इस कहानी में कौआ गाय को सीख देता है। इस तरह से यहां पर गाय झूला झूलने की इच्छा जाहिर करके एक लड़की की इच्छा को अभिव्यक्ति देती है ।

आगे की कहानी में कौआ झूला डाल देता है, लेकिन कौआ झुलाने को तैयार नहीं होता। आखिर में कोशिश करके गाय खुद ही झूलना सिखती है । यहां पर बाल मन को समझें, कि बच्चे कभी-कभी तुनक जाते हैं तथा उन्हें कुछ काम छोटे दिखायी पड़ते हैं। वे उन्हें नहीं करना चाहते। यहां पर कौआ कजरी गाय से कहता है कि, ''मैं धक्का देने वाला नहीं हूँ ।'' किताब में इस जगह कौए के तुनकने का चित्र बड़ा सुन्दर है। किताब में आगे गाय ने झूला झुलने की जिस तरह कोशिश की और वह कैसे उसमें सफल हुई ? इसका बड़ा मोहक चित्रण है - कजरी गाय के कानों में हवा की सीटियां गूंजने लगीं । उसके बाल हवा में उड़ने लगे और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । फिर बाद में गाय कौए से कहती है कि ''कौए भाई, अब तुम्हारी बारी है ।'' लेकिन कौआ मन ही मन कुढ़ता रहता है और झूलने को राजी नहीं होता । लेकिन गाय मस्ती से झूलती रहती है । इतने में ही किसान के ट्रैक्टर की आवाज आती है। कौआ चिल्लाता है, ''किसान आ रहा है ।'' यह ठीक उसी तरह से है जैसे बच्चे खाली क्लास में मस्ती से खेल रहे हैं और तब तक मास्टर जी डंडा लेकर आ जायें और एक लड़का बताये कि ''मास्टर जी आ रहे हैं। अंतत: किसान के आने पर कजरी गाय को झूले पर से कूदना पड़ता है और पेड़ों के पीछे छिप जाना पड़ता है। लेकिन यहां पर वह पेड़ों के पीछे नहीं छिप पा रही है । तब कौआ कहता है कि , तुम बहुत मोटी हो । गाय जवाब देती है, नहीं पेड़ पतला है । कौआ कहता है कि ''अपनी पूंछ संभालो। वह

पेड़ के दूसरी ओर साफ दिखायी दे रही है।'' इस तरह से गाय के छिपने वाले स्थान पर गाय और कौए के मन के गुदगुदाने वाले संवाद है । हमें केवल इन संवादों को महसूस करने की जरूरत है तभी ये मन को गुदगुदायेंगे ।

जब किसान जंगल में पड़े हुए झूले को देखता है तो अचंभित हो जाता है । जैसे कि अगर बच्चे किसी बाग से आम तोड़ लें और माली के आते ही चुपचाप छिप जायें । तब माली ठगा सा बाग के पेड़ों को देखता है और अपनी पगड़ी उतारकर जमीन पर रख देता है और बीड़ी सुलगाता है। जब उसकी कुछ भी समझ में नहीं आता तो चुपचाप अपने अन्य कामों में लग जाता है। कुछ इसी तरह से यहां पर भी होता है, किसान की कुछ भी समझ में नहीं आता और वह खीझता हुआ चला जाता है और अपनी टोपी वहीं भूल जाता है । इधर कौए और गाय की फुसफुसाहट चल रही है । कौआ किसान का मजाक बना रहा है, ''नहीं ! झुलो मत। उठो ! यहां से जाओ ! घर जाकर अपनी गायों का दूध दूहो।'' यह सब उसीस तरह से है जिस तरह से शरारती बच्चे अपने काम में खलल डालने वाले मास्टरजी का मजाक बनाते रहते हैं ।

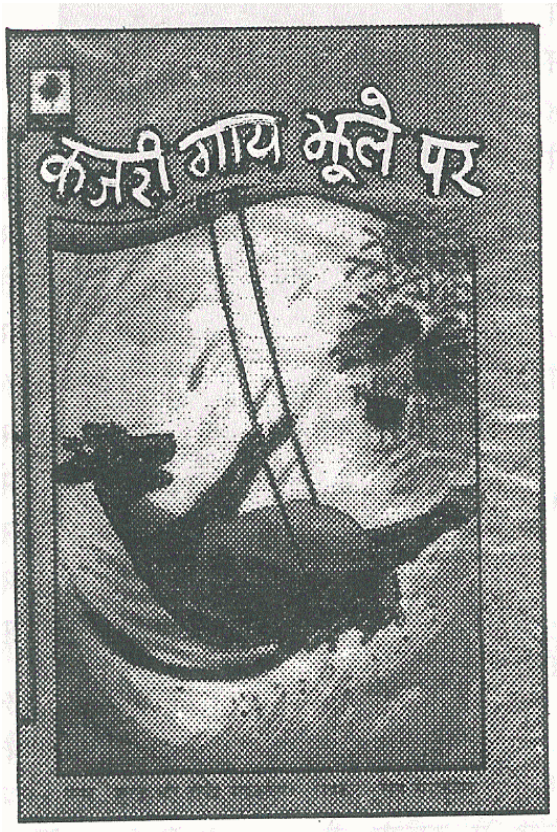

अंत में गाय झूलने का आनन्द लेकर मजे से सिर पर किसान की टोपी लगाये हुए अपने बाडे में पहुंचती है और चुपके से पिछले दरवाजे से अंदर घुस जाती है और मन ही मन कहती है, ''वाह भाई वाह ! क्योंकि मैं एक गाय हूं, इसका यह मतलब नहीं कि मैं सारा दिन खड़ी-खड़ी घास की जुगाली करती रहूं और टकटकी लगाए हर समय चीजों को घूरती रहूं।'' इसको हम इस संदर्भ में समझें कि कोई लड़की हूं तो यह नहीं कि मैं घर का काम करती रहूं । मैं भी साइकिल चला सकती हूँ । क्रिकेट खेल सकती हूँ या पैंट-शर्ट भी पहन सकती हूँ । उसका आनन्द ले सकती हूँ ।

जुज्जा तथा टामस वाइजलैंडर द्वारा मूल रूप से स्वीडिश में लिखित किताब 'मम्मा मू गुंगर' का सुंदर हिन्दुस्तानी रूपान्तरण अरविन्द गुप्ता ने किया है, जो बच्चों के मन को भाता है । अरविन्द गुप्ता काफी दिनों से बच्चों की शिक्षा, विज्ञान व कहानियों के लेखन व अनुवाद कार्य से जुड़े हुए हैं । इससे पहले उन्होंने कबाड़ से जुगाड़, माचिस की तीलियों के खेल आदि किताबें लिखी हैं तथा कीथ वारेन की पुस्तक, 'प्रिपरेशन फार अंडरस्टैडिंग' का 'समझ की तैयारी' नाम से तथा वैंडा गैग की प्रसिद्ध कहानी 'मिलयंस आफ कैट' का अनुवाद 'बिल्लीयों की बारात' नाम से किया जो चकमक के अप्रैल, 96 के अंक में प्रकाशित हुआ।

इस पूरी किताब में प्रूफ की एक-आध गलतियां है जैसे दयालु को दालू लिखा गया है तथा एक जगह अनुवादक ने भोजपत्र का पेड का प्रयोग किया है । यह शायद सभी बच्चों की समझ में न आये । इसकी जगह अगर कोई आसान नाम रखलेते, तो ज्यादा अच्छा रहता। वैसे कुल मिलाकर बहुत अच्छा अनुवाद हुआ है । सरल हिन्दी का प्रयोग किया गया है, जिसे बच्चा आसानी से आत्मसात कर सकता है । स्वेन नोरडोविष्ट का चित्रांकन स्तरीय है । इसकी मिसाल किताब के चित्रों को देखते हुए मिलती है । सुंदर चित्रांकन व विदेशी किताब के अनुवाद के कारण किताब मंहगी हो गयी है । पच्चीस रुपये की किताब आम बच्चे की पहुंच से बाहर है। लेकिन अंत में इन तकनीकी बातों को छोड़ दें तो बच्चों की किताबों के वीरान पड़े जंगल में किताब एक ताजगी भरा एहसास देती है । आशा है, नेशलन बुक ट्रस्ट आगे भी हमें बच्चों की सुन्दर देशी-विदेशी किताबों के अच्छे अनुवाद मुहैय्या करवायेगा।

• • •

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित यह परी कथा बच्चों को छोटा राज्य में ले जाती है। जहां के राजा की मृत्यु हो चुकी है और अब इस राज्य की बागड़ोर राजा के नौ वर्षीय बेटे के हाथों में हैं । यहां पर हमारे सोचने की बात यह है कि नौ वर्ष का राजकुमार कैसे राज्य चलाता होगा ? क्यों, उसका बाल मन तो कंचे खेलने को करता था। सिर पर मुकुट उसे भारी लगता था और कीमती कपड़े व जेवर गरम तथा तकलीफदेह जान पड़ते थे ।

नेकदिल प्रधानमंत्री राजकुमार को आदर्श राजा बनाना चाहता था । लेकिन रानी मां प्रगतिशील विचारों की थीं । वह बाल मनोदशाओं को भली-भाँति समझती थी । देखें -

वह बेटे को महल के अंदर घूमते-फिरते देखती रहती । उसे मनचाहा कुछ भी करने देती । टोका-टोकी बिल्कुल नहीं करती।

इसी तरह से वह प्रधनमंत्री की बातों को भी सुनती और सिर हिलाकर कहती -

''शायद हमें उसे अकेला छोड़ देना चाहिए और खेलने देना चाहिए । वह अभी बच्चा है। थोड़ा बड़ा होगा तो खुद बदल जाएगा।''

आगे की कहानी में पड़ौसी राज्य मवाना का राजा यह सोचता है कि छोटा राज्य आन्तरिक कलह से कमजोर हो चुका होगा । इसलिए इस पर कब्जा करना आसान है । लेकिन कहानी की मजेदार बात यह है कि पड़ौसी देश का राजा और उसका सेनापति राज्य जीतने के बावजूद नन्हें राजा के साथ कंचे खेलने में मशगूल थे । बिल्कुल बच्चों जैसे । कंचे के खेल में ही नन्हें राजा ने कुछ बड़ी-बड़ी बातें कही हैं । देखें -

लड़ाई जीतना बहादुरी कैसे हो सकती है ? मैं लड़ाई के बारे में जानता हूँ ... लोग लड़ाई में मारे जाते हैं । आदमी, औरतें बच्चे... सब मारे जाते हैं और उनके घर बरबाद हो जाते हैं ? ... ओह !... युद्ध बहादुरी कैसे हो सकता है ?

कुल मिलाकर पुस्तक में ज्यादा हल्ला-गुल्ला नहीं है । कहानी बाल मनोभावों को बखूबी दर्शाती है । इसे हमें समझना चाहिये । इस किताब का नयापन इस मायने में भी है कि कहानी का ढांचा तो पुराना है लेकिन इसका पाठ नया है । इस पाठ को कल्पनाशीलता व बाल मनोभावों के आधार पर बुना गया है । इसकी दूसरी खास बात यह है कि इसका अंत ''जैसा था वैसा'' की तर्ज पर आधारित है । इसका मतलब यह है कि अंत में जबरदस्ती बच्चों को कुछ उपदेश देने की जरा भी कोशिश नहीं की गई है ।

हां यह कहानी हम बड़ों को परोक्ष रूप से बताती है कि हम बाल मन को समझें । किताब को आकर्षक बनाने के लिए इसके हर पृष्ठ पर रंग-बिरंगे चित्र मौजूद हैं । जो बच्चे को लुभाने में सफल हो सकते हैं ।

एच. सी. मदन की लिखी इस पुस्तक का अनुवाद दिव्या शुक्ला ने किया है । चित्रांकन शैवाल चटर्जी का है । पुस्तक का मूल्य दस रुपये है ।

• • •

चित्रकार लेखक अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की बाल कथा 'खोये का गुड्डा' हाल ही में छपकर आई है । बच्चों की इस परीकथा को पढ़ते हुए हम बच्चों की रंग-बिरंगी काल्पनिक दुनिया में पहुंच जाते हैं । जहां का नायक एक बन्दर है । यह बन्दर अपनी समझदारी से राजमहल में फैली भ्रान्तियों को दूर कर दूध का दूध व पानी का पानी कर देता है ।

बच्चों की यह कहानी एक राजा और उसकी दो रानियों दूऊ और सूऊ पर केन्द्रित है। छोटी रानी सूऊ को राजमहल में बहुत आदर सम्मान मिला हुआ था लेकिन बड़ी रानी दूऊ को अनादर व अपमान ही मिलता था। अब यहां पर हम बाल साहित्य के संबंध में गौर करें तो हम इस तरह की सैकड़ों कहानियां पायेंगे । यह कहानियां भी बच्चों के लिए एक खास तरह के फ्रेम में बुनी हुई होती है, जिस तरह से आम भारतीय फिल्में । इन कहानियों में बच्चे शुरू से ही कुछ पात्रों के साथ हो लेते हैं । उनके दिमाग में उनकी छवियां स्पष्ट हो जाती हैं। संक्षेप में कहें, यह कहानियां बिल्कुल सपाट तरीके से चलती है । यहां लेखक को सिर्फ इतना चौकन्ना रहना पड़ता है कि वह किस तरह से इस 'फंतासी' को बाल-मनोविज्ञान के अनुसार

बुनता है । जहां बच्चे आश्र्यचकित हो सकें । उन्हें लगे कि यह 'खोये का गुड्डा' नहीं असली गुड्डा है । इस गुड्डे की जादूगरी ही बच्चों के मन में घर कर जाती है ।

बच्चों के लिए फंतासी लिखते समय हमें यह ध्यान रखना होता है कि इसमें तर्कों को किस तरह गूंथें कि यह फंतासी होते हुए भी हमें यथार्थ का आभास दे सके । वैसे तर्क नहीं, जो बच्चे के जेहन में आते-आते फुसफुसाकर रह जायें।

किताब को शुरू करते ही हमारा ध्यान निम्न पक्तियों पर चला जाता है -

दूऊ रानी - वह बड़ी रानी थी। उसे बहुत अनादर और अपमान मिलता था । वह राजा को फूटी आंख नहीं सुहाती थी। उन्होंने उसे एक टूटा फूटा घर दे रखा था और सेवा के लिए काली-कलूटी दासी ।

(पृष्ठ 3)

यहां पर काली-कलूटी जैसे शब्दों का इस्तेमाल बच्चों में रंगभेद का भ्रम फैलाता है तथा यहां पर यह बात भी पुख्ता होती है कि छोटे काम करने वाले काले होते हैं । जबकि हमें यहां पर ध्यान रखना चाहिये कि बच्चों में इस तरह की सोच न उपजे जिससे हम सब आज भी ग्रसित हैं । आगे 'डाकिनी-ब्राह्मणी' का प्रयोग पुरानी कहानियों में फैली ब्राह्मणों की साफ-सुथरी छवि पर आघात करता है क्योंकि यहां पर ब्राह्मणी ने 'विलेन' का साथ दिया है। यहां पर हमारा यह भ्रम टूटता है कि 'ब्राह्मण-ब्राह्मणी' के पात्र अच्छे ही होते हैं ।

किताब आगे पढ़ते हुए हम बच्चों के संसार में पहुंचते हैं। उसका मोहक वर्णन लेखक ने निम्न शब्दों में किया है -

बंदर ने देखा कि षष्ठी चौरा में चारों तरफ बच्चों का ही राज्य है, वहां केवल बच्चे ही बच्चे हैं - घर में बच्चे, बाहर बच्चे, जल में बच्चे, थल में बच्चे, रास्ता-घाट, पेड़ों की डाल, हरी घास पर जहां देखो बच्चों की ही भीड़, बच्चियों का ही झुंड । कोई काला, कोई गोरा, कोई सांवला। किसी के पांवों में पैंजनी, किसी के गले में हार । कोई बंसी बजाता हआ, कोई झुनझुना । कोई पांवों की पैंजनी बजाकर कमर पर हाथ रखे घूम-घूम कर नाच रहा था । किसी के पांवों में लाल जूते, किसी के सिर पर रंगीन टोपी। कोई लाखों रुपये की चादर ओढ़े था । एक दल काठ के घोड़े को टकबक-टकबक हांक रहा था। एक दल फूल बीन रहा था । एक दल पेड़ों से फूल तोड़ रहा था। चारों तरफ खेल-कूद, मारा-मारी, हंसी-रूलाई। वह एक नए तरह का देश था - सपनों का देश ।

(पृष्ठ 46)

इसी के आगे पढ़ते हुए हमारा ध्यान निम्न पंक्तियों पर अटक जाता है -

वहां केवल छोटे-छोटे बच्चे थे, केवल खेल-कूद थी । वहां कोई पाठशाला नहीं थी और न ही कोई गुरू और न गुरू के हाथ में छड़ी ।

(पृष्ठ 46)

यहां पर यह बात गौर करने की है आज से करीब सौ वर्ष पूर्व लिखी गई बच्चों की इस परीकथा में भी पाठशाला और गुरूजी का डर समाया हुआ है । हमारे लिए सोचने की बात यह है कि अभी तक ऐसी शिक्षा व्यवस्था नहीं बन पाई है जहां बच्चे खुशी-खुशी पढ़ें ।

किताब में किस्सागोई का पुट मिलता है । हर पृष्ठ पर मौजूद सादे व रंगीन चित्र किताब में चार चांद लगाते हैं । इन चित्रों में चित्रकला के 'बंगाल-स्कूल' की छाप दिखाई देती है। चित्रांकन (आशीष सेन गुप्ता) और अनुवाद (सूर्यनाथ सिंह) सराहनीय है । कुल मिलाकर यह किताब बच्चों का बरबस ध्यान खींचने में सहायक होगी । पुस्तक की कीमत 21 रुपये है । ◆

चर्चित पुस्तकें

कजरी गाय झूले पर
राजा जो कंचे खेलता था
खोये का गुड्डा

नेशनल बुक ट्रस्ट
ए-5, ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली - 110016